आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

(मुद्रण तारीख :- 31.07.2016) ■ अंक-602 ■ तारीख- 01 अगस्त 2016, श्रावण कृष्ण पक्ष -14 ■ सोमवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-2 ■ मूल्य -1 रूपया

श्री सत्यसांई -अनमोल वचन

भक्ति

भक्ति सन्निकर्ष की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है। यह शब्द "भज्" धातु से बना है जिसका अर्थ है सेवा करना। भक्ति शब्द का दूसरा अर्थ "भय मिश्रित मैत्री" भी है। परन्तु सच्ची भक्ति का आधार न सेवा है और न भय मिश्रित मैत्री है। सच्ची भक्ति "जीवात्मा परमात्मा का ही एक अंश है" जो कि चेतना से उत्पन्न होती है। जीवात्मा एवं परमात्मा के सम्बंध के पूर्ण ज्ञान के पश्चात् ही अनन्य भक्ति समझ में आ सकती है।

ऊर्जा उत्पन्न करता है - साहस

परिस्थितियाँ किसी के भी साथ न तो सदा अनुकूल रहती है न प्रतिकूल और न ही किसी एक वर्ग या व्यक्ति के किए बनती है इसलिए सदा अनुकूलता की उम्मीद करना न केवल व्यर्थ है, बल्कि अनावश्यक, अनुचित व हानिकारक

भी है। उचित ये होगा की आप अपनी साहसिकता, आत्मविश्वास और सहन शक्ति बढ़ाये, जो अनिवार्य हो उसे धैर्यपूर्वक सहन करते हुए बुद्धिमत्ता पूर्ण सोच–विचार कर निर्णय लेते हुए संकट का उचित व परिस्थितियों के अनुरूप संकट व समस्या का हल ढूँढे, जो उचित हो वे उपाय सोचने और प्रयास करने में कोई कमी न रहने दी जाये, हर स्थिति में संतुलन बनाये रखा जाये, कठिनाइयों व मुसीबतों से डर नहीं। वरन अपनी प्रतिभा से हाल व उपाय निकालने में बिना समय गँवाये लग जाना ही साहस कहलाता है। साहस वह हथियार है जो प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलना संभव बनता है।

सामान्यतः लोग साहसी व्यक्ति का ही साथ देना चाहते है और उसी के नेतृत्व में नये चुनौतीपूर्ण व गैर–पारम्परिक तरीके से कार्य को करने और सफलता प्राप्त करना चाहते है। जिस प्रकार आत्मविश्वास व्यक्ति में क्षमता का संचार करता है उसी तरह साहस उसमें ऊर्जा उत्पन्न करता है और व्यक्ति की जीवनचर्या में किए जाने वाले कार्यों में इसका सर्वाधिक महत्त्व और ये तमाम निर्णय की शक्ति का केंद्र बिन्दु होता है।

जोधपुर के पाँच पार्को में बनेंगे- जीम

tk/kiqjA शहर के सार्वजनिक उद्यान नए दौर के हिसाब से स्मार्ट होने जा रहे है। जयपुर और उदयपुर की तरह आने वाले दिनों में जोधपुर के उद्यान भी जिम सुविधा से लेस होंगे। जोधपुर विकास प्राधिकरण (जेडीए) इसकी तैयारी में जुट गया है।

tMh, vk;äu t;iqj ls ekxk lyku

जेडीए आयुक्त केसी मीणा ने बताया कि जेडीए अध्यक्ष के निर्देश पर जिम का प्लान और खर्च होने वाली राशि का ब्यौरा जयपुर से मांगा है। उन्होंने बताया कि सारा कार्य शुरू होने में एक–दो माह लगेंगे। शहर की सूरत बदलने की कवायद में पहला कदम है।

ikp ikdkZ esa cuxk fte

सम्राट अशोक उद्यान, उम्मेद उद्यान, नेहरू पार्क, मंडोर उद्यान व मानसागर पार्क । जेडीए इनमें जगह तय करेगा, जहाँ लोगों को जिम की पूरी सुविधा मिल सके।

प्रभु के आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करें

ध्यान टिकाने की कला बहुत से लोग सीखना चाहते हैं, परंतु अलग–अलग कारणों से। कुछ लोग शांति पाने के लिए इसे सीखना चाहते हैं तो कुछ लोग शारीरिक स्वास्थ्य में लाभ के लिए। कुछ लोग इसका अभ्यास अपनी एकाग्रता बढ़ाने के लिए करते हैं, ताकि अपने काम या अध्ययन में बेहतर हो पाएं। कुछ इसलिए सीखते हैं कि मानसिक या अलौकिक शक्तियों का विकास कर सकें। कुछ लोग ध्यान–अभ्यास इसलिए करते हैं कि वे प्रभु को पाना चाहते हैं।

प्रार्थना एवं ध्यान–अभ्यास के सभी फायदों में से सबसे बड़ा फायदा है, प्रभु से एकमेव होना। हम अपने अंदर विद्यमान ज्योति एवं श्रुति से जुड़कर परमात्मा का अनुभव कर सकते हैं और इस धारा से जुड़कर हम परमात्मा की गोद में पहुँच सकते हैं। बहुत से लोग अपने बारे में बहुत बढ़–चढ़कर सोचते है। हम सोच सकते हैं कि शारीरिक रूप से हम बहुत ताकतवर हैं, बहुत सुंदर हैं, अपनी बौद्धिक क्षमता या अपनी उच्च शिक्षा के कारण अहंकार कर सकते हैं। हमें अपनी नौकरी, अपने काम या अपनी पदवी का भी अहंकार हो सकता है। हमें इस बात का भी अहंकार हो सकता है कि हम धनी हैं या हमने इस भौतिक संसार में अपने लिए एक साम्राज्य स्थापित कर लिया है। ये सभी परिस्थितियाँ हमें ऐसा बना देती हैं कि हम दूसरों को अपने से हीन समझने लगते हैं। जब तक हम ऐसी अवस्था में रहते हैं, तब तक हम किसी दूसरे की सहायता करने के योग्य नहीं रहते हैं। यदि हम धनी हैं तो किसी की आर्थिक रूप से मदद कर सकते हैं। अगर हम शक्तिशाली हैं तो किसी की शारीरिक रूप से मदद कर सकते हैं। परंतु इस प्रक्रिया में अगर हम अहंकार की भावना रखते हैं तो वह मदद हमारी आध्यात्मिक प्रगति में उपयोगी नहीं होगी बल्कि बाधक होगी।

आध्यात्मिक प्रेम हमें हर पल पुकार रहा है। यदि हम अपनी नजरें उस दिशा में घुमाएं और पूरी निष्ठा के साथ प्रभु के आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करें, तो प्रभु हमारा जवाब अवश्य देंगे। यह विश्वास करना कठिन है, परंतु वह एक मात्र वस्तु, जो हमें सदा–सदा के आनंद एवं प्रेम से अलग रखती है, हमारा अहम ही है। हमारी बुद्धि एवं अहम हमें भौतिक दुनिया में खुशी की खोज में लगाए रखते हैं। यदि हम रुक जाएँ, अपने अंदर की शांत–अवस्था में स्थित हो जाएँ और प्रभु से प्रार्थना करें तो वे निश्चित रूप से हमारे सम्मुख प्रकट होंगे। वे हमें इस दुनिया के मायाजाल से ऊपर उठा लेंगे और दिव्य प्रकाश के मंडलों में ले जाएँगे जहाँ हम अमर–प्रेम के सोते से जी भरकर प्रेमामृत पी सकेंगे।

मानव मन के बोल

❖ वाड़ एफला शिविर की यादे ❖

जब रोटी खा सकता हूँ तो रोटी खिला भी सकता हूँ, मैं जब पानी पी सकता हूँ तो पानी पिला भी सकता हूँ। सन् 1971 जून से लेकर 1975 तक का पाली–मारवाड़ का जीवन बहुत अच्छा रहा। उस प्रवास में मुझे कितना प्यार व मोहब्बत मिली। पाली–मारवाड़ में ही हमारे आदरणीय लश्करी साहब और मैं आपको बीच के कालखण्ड की बात निवेदन करूँ, तो आदरणीय लश्करी साहब सब को जय सिया राम बोलते थे। हर सप्ताह किसी एक जगह बैठकर सुन्दरकाण्ड का पाठ करते थे। कभी रमेशजी भाईसाहब के यहाँ कभी मेरे यहाँ कर दिया, कभी लश्करी साहब के यहाँ किया और महीने में एक बार अखण्ड रामायण का पाठ 24 घण्टे तक करते। उनमें खूब लगन थी भैया, भगवान ने उन्हें लगन रूपी वरदान दिया। लगन के साथ जोश, धैर्य, लगन रूपी वरदान दिया। लगन के साथ जोश, धैर्य, विवेक इन पर अपने देह देवालय का निर्माण करो। बहुत कविता आपको सुनायेंगे –

xky&xky xkjh ekxA
nk vk[kk dh nk jkgA
ckx lgkx i{k ei rA
vipy c/k d{k ei rA¼100½

साकेत–कल राम जी ने पूछा था, गुरूदेव आपने साकेत कैसे याद किया? मैं तो भक्त हूँ मैथिलीशरण गुप्त का, चिरगाँव झाँसी वाले राष्ट्र कवि जी का, जिन्होंने लिखा है कि राम आप ईश्वर नहीं हो क्या? सब जगह रमे वो नहीं हो क्या?तो ईश्वर मुझे क्षमा करे। मैं निर ईश्वर हूँ, मन तुझमें राम लगा रहे। यदि राम आप ईश्वर नहीं हो, तो मैं और किसी ईश्वर को मानता नहीं, जानता नहीं।

^^jke jerh jerh] je je eukje]
lLr uke rY;e jkeuke ojk% ue%**¼101½

पारस पत्थर को घर पर ले आओगे तो घर में डाका पड़ जायेगा। उससे सोना बनाओगे और लोगों को पता चल जायेगा तो वो तुम्हें मार डालेंगे। पारस पत्थर भी ले जायेगा और तुम्हारा जीवन भी नहीं रहेगा। राम नाम रूपी पारस पत्थर, सेवा रूपी पारस पत्थर, ये करूणा रूपी पारस पत्थर।

मैंने एक बार राजमल जी भाई साहब को लिखा था, भाई साहब मैं आप जैसे पारस रूपी पत्थर के पास रहकर के भी सोना नहीं बन पाया, लोहा ही बना रहा। भाई साहब ने मुझे चार पेज का पत्र लिखा था, कैलाश जी, लोहा ही बने रहना, सोना बनने की कोशिश मत करना, सोना झगड़ा कराता है। हमने तो बहुतों को देखा, जहाँ पर भी धन सम्पति है–वहाँ दुःख होता है। हमारे अपने कई सगे –संबंधी हैं, जहाँ ऐसी विषकन्या है। एक–दूसरे की बुराई हो गई, घर पर आना जाना बन्द हो गया। छोटे–छोटे बालबच्चों में भी भेद पड़ गया। एक नहीं, कई प्रसंग देखता हूँ। हे ठाकुर जी! हमें तो बचाना, हे प्रभु हमारी रक्षा करना। इनको सदबुद्धि देना, जैसे गोवाहटी में पिता–पुत्र ने आपस में एक–दूसरे को अपना लिया, जैसे कोटा में दोनों भाई गले मिल गये, ऐसे भाई–भाई गले मिल जावें।

❖ कार्य के प्रति जिम्मेदारी ❖

परम पिता परमात्मा की परम् कृपा से कमला देवी जी के साथ अत्यन्त मधुर दाम्पत्य जीवन गुजरा और गुजर रहा हैं, बहुत खुश हैं। आपको मैंने कहा, लक्ष्मीजी आयीं, बात तो भीलवाडा की है। परदादा बा के कमरें में उस समय कल्पना जी का जन्म हुआ था, और जब मेरे प्रशान्त बाबू का अजमेर में जन्म हुआ, उस समय कमला जी के समाचार आते थे कि दो–तीन दिन से हॉस्पीटल में हैं, और बहुत कष्ट में हैं। भगवान से प्रार्थना करता था और बच्चों का बचपन बहुत अच्छा रहा। सन् 1975 के अन्त तक मन में लगा, मेरा ट्रांसफर हो गया। सिरोही कर्मभूमी का एक स्वर्णिम अध्याय है, वहाँ मार्केट के बीच में एक जैन महानुभाव की बहुत बड़ी हवेली थी, उसका एक पार्टेशन किराये पर लिया था। अन्दर बड़ा चौक भी था, बाहर बड़ा दरवाजा, हवेली जैसा ही पुराना दरवाजा। दरवाजे के बाहर दोनों तरफ बैठने का उस जमाने में हुआ करता था, सामने दो–तीन कमरे बहुत अच्छा था। सिरोही में हमारे पूरणमल जी शर्मा, बहुत महान् व्यक्ति बड़ी याद आती है, जयपुर बिराजते हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

कमलनाथ महादेव मंदिर

झीलों की नगरी उदयपुर से लगभग 80 किलोमीटर झाड़ौल तहसील में आवारगढ़ की पहाडियों पर शिवजी का एक प्राचीन मंदिर स्थित है जो कमलनाथ महादेव के नाम से प्रसिद्ध है। पुराणों के अनुसार इस मंदिर की स्थापना स्वंय लंकापति रावण ने की थी। यही वह स्थान है जहाँ रावण ने अपना शीश भगवान शिव को अग्निकुंड में समर्पित कर दिया था जिससे प्रसन्न होकर भगवान शिव नें रावण की नाभि में अमृत कुण्ड स्थापित किया था। इस स्थान की सबसे बड़ी विशेषता यह है की यहाँ भगवान शिव से पहले रावण की पूजा की जाती है क्योंकि मान्यता है की शिव से पहले यदि रावण की पूजा नहीं की जाए तो सारी पूजा व्यर्थ जाती है।

एक बार लंकापति रावण भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए कैलाश पर्वत पर पहुँचे और तपस्या करने लगे, उसके कठोर तप से प्रसन्न हो भगवान शिव ने रावण से वरदान मांगने को कहा। रावण ने भगवान शिव से लंका चलने का वरदान मांग डाला। भगवान शिव लिंग के रूप में उसके साथ जाने को तैयार हो गए, उन्होंने रावण को एक शिव लिंग दिया और यह शर्त रखी कि यदि लंका पहुँचने से पहले तुमने शिव लिंग को धरती पर कहीं भी रखा तो मैं वहीं स्थापित हो जाऊँगा। कैलाश पर्वत से लंका का रास्ता काफी लम्बा था, रास्ते में रावण को थकावट महसूस हुई और वह आराम करने के लिए एक स्थान पर रुक गया। और ना चाहते हुए भी शिव लिंग को धरती पर रखना पड़ा।

आराम करने के बाद रावण ने शिव लिंग उठाना चाहा लेकिन वह टस से मस ना हुआ, तब रावण को अपनी गलती का एहसास हुआ और पश्चाताप करने के लिए वह वहीं पर पुनः तपस्या करने लगे। वो दिन में एक बार भगवान शिव का सौ कमल के फूलों के साथ पूजन करते थे। ऐसा करते–करते रावण को साढ़े बारह साल बीत गए। उधर जब ब्रह्मा जी को लगा कि रावण की तपस्या सफल होने वाली है तो उन्होंने उसकी तपस्या विफल करने के उद्देश्य से एक दिल पूजा के वक्त एक कमल का पुष्प चुरा लिया। उधर जब पूजा करते समय एक पुष्प कम पड़ा तो रावण ने अपना एक शीश काटकर भगवान शिव को अग्नि कुण्ड में समर्पित कर दिया। भगवान शिव रावण की इस कठोर भक्ति से फिर प्रसन्न हुए और वरदान स्वरुप उसकी नाभि में अमृत कुण्ड की स्थापना कर दी। रावण के कमल के फुलों से भगवान शिव की पूजा करने के कारण यह स्थान कमलनाथ महादेव के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पहाड़ी पर मंदिर तक जाने के लिए आप नीचे स्तिथ शनि महाराज के मंदिर तक तो अपना साधन लेके जा सकते है पर आगे का 2 किलोमीटर का सफर पैदल ही पूरा करना पड़ता है। इसी जगह पर भगवान राम ने भी अपने वनवास का कुछ समय बिताया था।

सम्पादकीय

श्रममेव जयते

बिना मेहनत के जीवन की गति संभव नहीं है। जीवन एक नहर के समान है। जब तक वह परिश्रम की नदी से जुड़ी रहती है, जब तक जल की कलकल से सक्रिय रहती है परन्तु यदि उसे नदी से काट दिया जाए तो फिर वह सूख जाती है। नहर सूख जाने के कारण समीपवर्ती सभी खेत सिंचाई से वंचित रह जाते है, जिसका प्रतिफल बहुत विनाशपूर्ण एवं घातक सिद्ध होता है। इसलिए, हमें अपने जीवन की नहर को परिश्रम रूपी नदी से कभी भी अलग नहीं करना चाहिए। साथ ही यह भी नहीं भूलना चाहिए कि जिस परमपिता परमेश्वर ने इस सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया है, उसके प्रति हमें सदा कृतज्ञ रहना चाहिए। इस कृतज्ञतापूर्ण भावना से हमें आंतरिक शक्ति एवं साहस मिलता है। हमारी सम्पूर्ण शक्ति का स्त्रोत वही सर्वशक्तिमान परमपिता परमेश्वर है। वह सागर के समान गंभीर और विशाल है और ब्रह्माण्ड के समान सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है। उसके शक्तिपुंज मे से बिन्दु जैसे अंश के सहारें ही हम कठपुतलियों की तरह चलते–फिरतें है। यदि उसकी अंगुलियों से हमारी डोर टूट जाए, तो हमारा अस्तित्व शून्यमय होकर विलीन हो जाएगा।

उसकी असीम शक्ति से हमें बल मिलता है। पग–पग पर बढ़नें के निर्देश को हम महसूस कर पाते है। मिसाल के तौर पर किसी के आक्रमण से हम तुरंत सचेत एवं सतर्क हो जाते है, चाहे वह आक्रमण कितना ही छिप कर अनायास क्यों न किया गया हो। उस समय हमारी रक्षा हेतु वही अदृश्य निर्देश हमें सचेत कर देता है। उसी विराट शक्ति सागर की एक बूँद पाकर हम महाशक्ति के स्वामी बन जाते है। संसार के प्रत्येक सबलतम संघर्ष का सामना करने के लिए सक्षम और समर्थ हो जाते है। उसी अद्भुत शक्ति और आत्मविश्वास की ऊर्जा लेकर व्यक्ति अपना प्रत्येक कार्य सम्पन्न करता है और मार्ग में आने वाली बाधाओं व विपदाओं को परास्त करता हुआ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता चला जाता है। ऐसे ही कर्मठ और परिश्रमी लोगों का भविष्य उज्ज्वल होता है और उनकी सफलता में रंचमात्र भी संदेह नही रहता है।

इस संसार के प्रत्येक सुख का आनन्द भोगने का सर्वप्रथम अधिकार आपका है, क्योंकि आपने इन्हे कठोर परिश्रम के पश्चात प्राप्त किया है। जो लोग कठिन परिश्रम करते है, चोटी का पसीना एड़ी तक बहा देते है, काम करते समय रात–दिन एक कर देते है, वे ही सुख–समृद्धि के सच्चे हकदार समझे जाते है। परिश्रम से प्राप्त समृद्धि से व्यक्ति को जितना सुख, संतोष और आनंद मिलता है उसकी तुलना में संसार का कोई वैभव हल्का महसूस होता है।

fn0;kxk u dh f'kokjk/kuk

&fn0;kx efgykvk d fy, yx lkou d >y

mn;ijA सांवन के सोमवार पर नारायण सेवा संस्थान में संस्थापक कैलाश 'मानव' व अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल के सानिध्य में दिव्यांग जन ने भगवान शिव की पूजा की ओर विश्व कल्याण के स्वास्थ्य की कामना की। निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल ने बताया कि देश के विभिन्न भागों से निःशुल्क ऑपरेशन के लिए आये दिव्यांगों ने भगवान शिव से अपने आरोग्य ओर मुख्यधारा के साथ देश के विकास में अपने योगदान की क्षमता प्रदान करने की प्रार्थना भी की। इस अवसर पर दिव्यांग महिलाओं के लिए विशेष रूप से सावन के झूले लगाये गए। जिन पर इन्होंने साधिकाओं के साथ आनन्द लिया। संस्थान के पोलियो अस्पतालों में प्रसाद वितरण किया गया।

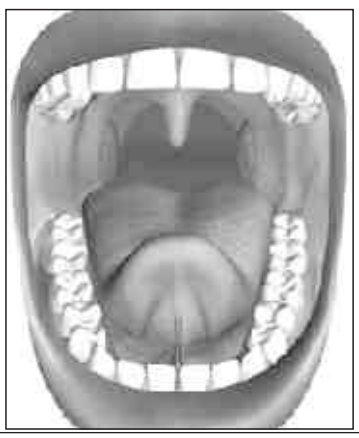

मसूड़ों का सिकुड़ ना (रिसेशन)-टार्टर से खराब हुए मसूड़े

टार्टर से मसूड़े सिकुड़ने लगते हैं और इससे दाँत के जड़ों का ज्यादा दिखाई देने लगते हैं। टार्टर दाँत की अंदरूनी सतह पर जमा हो जाता है। सोते समय मुँह में लार इकट्ठी हो जाती है। इससे नीचे के सामने के दाँतों में टार्टर जमा हो जाता है। और जैसे ही एक बार टार्टर बनना शुरू होता है यह बढ़ता ही जाता है। अच्छी तरह नियमित रूप से ब्रश करने से हम टार्टर से बचाव कर सकते हैं। ध्यान रहे कि टार्टर हट जाने के बाद भी मसूड़े पहले जैसे ठीक ठाक नही होते।

दाँतों में फसा खाना नुकसानदेह है–मसूड़ों के संक्रमण का एक और कारण मसूड़ों और दाँतों के बीच खाने के कण फंसे रह जाना भी है। यह ठीक से ब्रश न करने से होता है।

cuk, etcr fj'r

çip NkM % प्रपंच बड़ा चटपटा शब्द है। लोग इसे चटखारे ले ले कर इस्तेमाल करते हैं. मसलन, बहू के भाई ने इंटरकास्ट मैरिज कर ली. बस फिर तो बहू का ससुराल के लोगों से नजरें मिलाना मुश्किल हो गया. सासूमां अपने दिए संस्कारों की मिसाल देदे कर बहू के मायके के लोगों की धज्जियाँ उड़ाने में मशगूल हो गईं.

अपना उत्तरदायित्व समझें: उत्तरदायित्व का मतलब सिर्फ माता–पिता की सेवा करना ही नहीं, बल्कि अपने बच्चों के प्रति भी आप के कुछ उत्तरदायित्व होते हैं. आजकल के माता–पिता आधुनिकता की चादर में लिपटे हुए हैं. बच्चों को पैदा करने और उन्हें सुख सुविधा देने को ही वे अपनी जिम्मेदारी मानते हैं. लेकिन इस से ज्यादा वे अपनी पर्सनल लाइफ को ही महत्त्व देते हैं. इस स्थिति में यही कहा जाएगा कि आप एक आदर्श माता–पिता नहीं हैं. लेकिन इस नए वर्ष में आप भी आदर्श होने का तमगा पा सकते हैं यदि आप अपने उत्तरदायित्वों को पूरी शिद्दत से निभाएं।

झूठ का न लें सहारा: अकसर देखा गया है कि अपनी जिम्मेदारियों से बचने, अपनी साख बढ़ाने या फिर अपनी गलती छिपाने के लिए लोग झूठ का सहारा लेते हैं. संयुक्त परिवार में झूठ की दरारें ज्यादा देखने को मिलती हैं, क्योंकि एकदूसरे से खुद को बेहतर साबित करने की प्रतिस्पर्धा में लोगों से गलतियाँ भी होती हैं. लेकिन इन्हें नकारात्मक रूप से लेने की जगह सकारात्मक रूप से लेना चाहिए. जब आप ऐसी सोच रखेंगे तो झूठ बोलने का सवाल ही नहीं उठता. इस वर्ष सोच में सकारात्मकता ले कर आएं. इस से पारिवारिक रिश्तों के साथ आप का व्यक्तित्व भी सुधर जाएगा।

आर्थिक मनमुटाव से बचें: आधुनिकता के जमाने में लोगों ने रिश्तों को भी पैसों से तराजू में तोलना शुरू कर दिया है।

रिश्तेदारियों में अकसर समारोह के नाम पर धन लूटने का रिवाज है। शादी जैसे समारोह को ही ले लीजिए। यहाँ शगुन के रूप में लिफाफे देने और लेने का रिवाज है। इन लिफाफों में पैसे रख कर रिश्तेदारों को दिए जाते हैं. जो जितने पैसे देता है उसे भी उतने ही पैसे लौटा कर व्यवहार पूरा किया जाता है। लेकिन ऐसे रिश्तों का कोई फायदा नहीं जो पैसों के आधार पर बनते बिगड़ते हैं. इस वर्ष तय कीजिए कि रिश्तों में आर्थिक मनमुटाव की स्थिति से बचेंगे, रिश्तों को भावनाओं से मजबूत बनाएँगे।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता: अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लेख हमारे देश के संविधान में भी किया गया है, लेकिन परिवार के संविधान में यह हक कुछ लोगों को ही हासिल होता है, जो बेहद गलत है। अपनी बात कहने का हक हर किसी को देना चाहिए. कई बार हम सामने वाले की बात नहीं सुनते या उसे दबाने की कोशिश करते हैं अपने सीधेपन के कारण वह दब भी जाता है, लेकिन नुकसान किस का होता है? आप का, वह ऐसे कि यदि वह आप को सही सलाह भी दे रहा होता है, तो आप उस की नहीं सुनते और अपना ही राग अलापते रहते हैं. ऐसे में सही और गलत का अंतर आप कभी नहीं समझ सकते. इसलिए इस वर्ष से तय करें कि घर में पुरुष हो या महिला, छोटा हो या बड़ा हर किसी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी जाएगी.

सामाजिक रिश्ते

संतुलित और सुखद जिंदगी जीने के लिए पारिवारिक रिश्तों के साथ–साथ सामाजिक रिश्तों को भी मजबूत बनाना जरूरी है। आइए हम आप को बताते हैं सामाजिक रिश्तों को बेहतर बनाने के 5 तरीके।

ईगो का करें त्याग: ईगो बेहद छोटा लेकिन बेहद खतरनाक शब्द है। ईगो मनुष्य पर तब हावी होता है जब वह अपने आगे सामने वाले को कुछ भी नहीं समझना चाहता. उसे दुख पहुँचाना चाहता हो या फिर उस का आत्मविश्वास कम करने की इच्छा रखता हो. अकसर दफ्तरों में साथ काम करने वाले साथियों के बीच ईगो की दीवार तनी रहती है। इस चक्कर में कई बार वे ऐसे कदम उठा लेते हैं, जो उन के व्यक्तित्व पर दाग लगा देते हैं या कई बार वे सामने वाले को काफी हद तक नुकसान पहुँचाने में कामयाब हो जाते हैं. लेकिन क्या ईगो आप को किसी भी स्तर पर ऊँचा उठा सकता है? शायद नहीं यह हमेशा आप से गलत काम ही करवाता है। आपको खराब मनुष्य की श्रेणी में लाता है, तो फिर ऐसे ईगो का क्या लाभ जो आप को फायदे से ज्यादा नुकसान पहुँचाता हो? ठान लीजिए कि ईगो का नामोनिशान अपने व्यक्तित्व पर से मिटा देंगे और दूसरों का बुरा करने की जगह अपने व्यक्तित्व को निखारने में समय खर्च करेंगे.

मददगार बनें: मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और हमेशा से समूह में रहता चला आया है। इस समूह में कई लोग उस के जानकार होते हैं तो कई अनजान भी. लेकिन मदद एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है। किसी की तकलीफ में उस का साथ देना या उस की हर संभव मदद करना एक मनुष्य होने के नाते आप का कर्तव्य है।

मुस्कान मानवता की

¼ekuo /ke Ük[kyk dk "k"Ve ¼6½ i"i½

समानता के भाव

सिद्धि शुद्धि होने लगेगी, 'जो शुद्धि होई' कहते है, शुद्ध से काम करना, ध्यान से करना छोटे–छोटे काम, छोटे काम, जब आप बढ़िया करोगे तो सिद्धिया मिलेगी, सिद्धियाँ। मतलब नाव पे, बिना नाव लिये पानी में पैदल चलना एक सिद्धि नहीं हैं। क्या फायदा, उस सिद्धि का जाबलि ऋषि को भी सिद्धि मिली।

सिद्धि हैं दीन–दुःखियों की सेवा। सिद्धि हैं विकलांग का ऑपरेशन कराना, उनको खड़ा करना।

lkjBk %

tk lfejr flf/k gkb xu uk;d dfooj cnuA
djm vuxg lkb cf) jkfl lHk xu lnuAA

तो मैं निवेदन कर रहा था। मैंने तो विश्वास किया हैं। श्रद्धा विश्वास से ऊपर हैं। शंकर भगवान की कृपा, पार्वती माता की कृपा। तो 8:30 बजे पी.एन.टी. कॉलोनी छोड़ी। आप अन्दाजा लगावे। जब 9 बजे वाड़ाफला पहुँचना था, तब तो केवल हाथीपोल पहुँचे थे। घासीराम जी अग्रवाल साहब और स्वर्ग में बैठी धर्मपत्नी अनि बाई धन्यवाद हैं। जिन अनिबाई ने सिलाई कर करके अपने बच्चों के कपड़े बनाती थी। वाड़ाफला चलूँगी। मेरे को एक हफ्ता पहले बोल दिया था। मैं बच्चों के 4–5 शर्ट सिलाई करके लाऊंगी। कपड़ा लाना, उसको सिलाई करना, बच्चों के लिए ले चलना। घासीराम जी को लेकर के फिर हम आदरणीय के.एस. हिरण साहब को लेने पहुँचे पंचवटी। मैं उनका बहुत आभारी हूँ। आदरणीय खड्ग सिंह जी हिरण साहब, के.एस. हिरण साहब। जो सुखाड़िया युनिवर्सिटी में डीन साहब रहे। एग्रीकल्चर कॉलेज डीन साहब और हमारे परम् पूज्य उनके सुपुत्र डॉ. शैलेन्द्र जी हिरण जो जैन समाज के अध्यक्ष कई बार रहे। अभी भी पदाधिकारी हैं, और हिरण एक्स–रे क्लिनिक बहुत यश प्राप्त, बहुत प्रसिद्धि प्राप्त क्लिनिक हैं। एक्स–रे, सोनोग्राफी इत्यादि का।

तो शैलेन्द्र जी के पूज्य पिताजी, पूज्य माता जी, ये दोनों भी तैयार थे। इन दोनों ने भी एक बेग में वाड़ाफला के रामुड़िया जी के लिये, वाड़ाफला के हमारे मगना जी बा साहब के लिये और वृद्धा माता किसनी बाई के लिये थैले में प्रसाद ले रखा था। कुछ पराठे रखे थे। हां हां हां, धन्यवाद हैं, धन्यवाद हैं।

और फिर बस में बिराजे जो स्वर्ग से हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। आदरणीय स्व. आर. डी. दीक्षित साहब, सेन्ट्रल स्कूल के प्रिंसिपल साहब। मेरी आँखे भर आयी। ऐसे सत्य सांई बाबा के शिष्य, भक्त सच्चे भक्त। जो सेवा को सेवा ही सर्व एज ईट ईज मच यू केन सेवा का आप जितना कर सको और हमारी पूज्य भाभी जी उनकी धर्म–पत्नी जी, दीक्षित साहब की धर्म–पत्नी जी। वों भी सेन्ट्रल स्कूल में, मैं उनके दर्शन करने जाऊँगा, उनको बुलाऊंगा।

आदरणीय दीक्षित साहब को परमात्मा ने अपने चरणों में बुला दिया। भाभी जी, बड़े आदरणीय मैं उनको बुलाऊँगा, वो हमारे परम् पुज्य हैं, जिन्होंने हमारे लिये उस समय त्याग–तपस्या की। उनके आधार पर आज 30 साल में नारायण सेवा की ये दिवारें खड़ी हुई हैं। बिल्डिंगें तो बहुत अच्छी लग रही हैं। बिल्डिंगों के नींव में तो आदरणीय दीक्षित साहब बिराजे, उनकी धर्म–पत्नी जी बिराजी। और हम यहाँ से महाकालेश्वर जी भगवान के जय–जयकार करते हुए अलसीगढ़ के रास्ते वाड़ाफला पहुँचे।

लोग इंतजार कर रहे थे। इंतजार कर रहे थे ना मालूम क्या–क्या सोच रहे होंगे। कैलाश जी ने कह तो दिया नारायण सेवा आयेगी–आयेगी कि नहीं आएेगी? दो घण्टे से इंतजार कर रहे हैं, हैं प्रभु! हे हमारे आदिवासी, हे हमारे वनवासी, मुझे माफ करना। मेरे हाथ की बात नहीं थी। मैं मजबूर था। इसको कहते हैं, जाने–अनजाने भूल होना।

कुछ भूल होती है, जान कर के करना, कुछ अनजाने में हो जाती हैं। ये अनजानी भूल हैं कि मेरे हाथ में नहीं था। जान कर के भूलें मत करना।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़